International Journal of Education and Science Research Review
Volume-1, Issue-1 February 2014 ISSN 2348-6457

"रीवा जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों, मूल्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन"

सुनीता
शोधार्थी
(एम0ए0, एम0एड0)
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय,
रीवा म0प्र0

प्रस्तावना :

शिक्षा अंधकार से प्रकाश की ओर मानव यात्रा का नाम है। शिक्षा से मनुष्य के अन्तः चक्षु खुल जाते हैं। उसे आत्मिक तथा अलौकिक प्रकाश मिलता है। शिक्षा से सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है। किसी भी राष्ट्र या समाज में जो उन्नति परिलक्षित होती है, वह उस राष्ट्र अथवा समाज की शिक्षा का प्रतिफल है तथा किसी समाज या राष्ट्र को अधोगति में जाना अशिक्षा का द्योतक है। शिक्षा द्वारा इस ज्ञान में वृद्धि होती है, जो पारस्परिक संबंधों के निर्धारण तथा व्यक्ति के विकास में सहायक है।

शिक्षा के क्षेत्र में असमानतायें पाई जाना एक सामान्य सी बात है। विशेषकर विकासशील देशों में सुविधाओं का असमान वितरण देखने में आता है। यह शिक्षा सुविधायें न केवल गुणवत्ता के मत से असमान है बल्कि शिक्षा की पहुंच के हिसाब से भी असमान पाई जाती है। आमतौर पर यह पाया जाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की सुविधायें शहरी क्षेत्रों की तुलना में कम है यही कारण है कि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का प्रचार-प्रसार भी कम ही हो पाता है।

शिक्षा व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली साधन है। यही कारण है कि प्रत्येक समाज अपने नागरिकों के समुचित विकास के लिये शिक्षा प्रक्रिया का उपयोग करके उनमें ज्ञान, कौशल, अवबोध, अभिवृत्तियां, मूल्य एवं आत्म प्रत्यय आदि का समावेश करने का प्रयास करता है जिससे उसके नागरिक अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन सफलतापूर्वक कर सकें। इसके साथ-साथ शिक्षा समाज को एकीकृत एवं संगठित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। शिक्षा समाज को विघटित करने वाले विभिन्न कारकों यथा ईर्ष्या, वैमनस्य, पक्षपात, निहित स्वार्स्थ, अंधविश्वास धर्मान्धता, रूढ़िवादिता आदि का खंडन करके समाज को एकीकृत एवं संगठित करने में भी मदद करती है।

सामाजिक न्याय तथा समानता की दृष्टि से यह आवश्यक है कि वंचित एवं सम्पन्न वर्गों के बीच खाई को शीघ्रातिशीघ्र कम कर दिया जाये। शिक्षा इस कार्य में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। सामाजिक न्याय तथा समानता की दृष्टि से भी यह अत्यन्त आवश्यक है कि शैक्षिक अवसरों की उपलब्धता एवं उसके वास्तविक उपभोग में दृष्टिगोचर होने वाली असमानता को दूर करके सभी क्षेत्रों (ग्रामीण एवं शहरी) के छात्रों को शिक्षा प्राप्ति के समान अवसर उपलब्ध कराये जायें।

अतीत में भारत में शिक्षा प्रसार काफी अधिक था और जनता का एक बड़ा भाग इस सुविधा से लाभान्वित हो रहा था। इसके सामान्य सिद्धांत थे सादा जीवन उच्च विचार, बौद्धिक स्वतंत्रता, कम गुरू शिष्य अनुपात, वैयक्तिक भेदों का सम्मानः शिक्षा की मठ-आधारित प्रकृति, मुक्त शिक्षा की व्यवस्था तथा निगरानी की व्यवस्था जिसके कारण एक-एक छात्र पर ध्यान देना संभव था; भारत में देशी शिक्षा की पूरी प्रणाली की सफलता अधिकतर गुरू शिष्य संबंध पर निर्भर होती थी जिसमें शिष्य गुरू का आदर और गुरू शिष्य से प्रेम करता था किसी का कोई मौद्रिक हित नहीं होता था और शिक्षा कोई व्यापार नहीं होती थी। समुदाय और शासन, दोनों की ओर से शिक्षक को सम्मानजनक सामाजिक पद प्राप्त था। ज्ञान को शासन, दोनों की ओर से शिक्षक को सम्मानजनक सामाजिक पद प्राप्त था अधिकतम मानवीय विकास जो परीक्षायें उत्तीर्ण करने के तकाजों से बाधित न हो।

शिक्षा की यह प्रगति 18वीं सदी के अन्त तक जारी रही। यहां तक कि 19वीं सदी के शुरू में भी देश में देशी शिक्षा की एक व्यापक और जीवन्त प्रणाली अस्तित्व में थी।

भारतीय संविधान की प्रस्तावना में भारत को सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक, धर्म निरपेक्ष, समाजवादी गणराज्य बनाने के लिये उसके समस्त नागरिकों को न्याय, स्वतंत्रता, समानता और भ्रतत्व प्रदान किये जाने का उल्लेख है। यही हमारा राष्ट्रीय लक्ष्य है, यही हमारे राष्ट्र के मूल्य व उद्देश्य है।

इन राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्ति के लिए शिक्षा को एक सशक्त माध्यम माना गया है और यह सही भी है क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र ने अपने अद्वितीय सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के लिए अपनी अलग राष्ट्रीय प्रणाली का विकास किया है। भारत में इस दिशा में प्रयास 1948से प्रारंभ हुए थे जबकि डॉ. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का गठन किया गया और सन् 1952 में श्री मुदालियर की अध्यक्षता में माध्यमिक शिक्षा आयोग गठित हुआ, इन आयोगों की रिपोर्ट आयी, क्रियान्वित भी हुई किन्तु शिक्षा के समग्र रूप पर विचार डॉ. कोठारी की अध्यक्षता वाले शिक्षा आयोग (1964-1966) ने किया, जिसके आधार पर जुलाई 1968 में सर्वप्रथम स्वतंत्रता भारत की प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा की गई।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार शिक्षा को एक ओर जहाँ राष्ट्र की संस्कृति का संरक्षण करना है, वहीं संविधान के संकल्पों को पूरा करने में समर्थ नई पीढ़ी को तैयार करना है। शिक्षा की प्रमुख भूमिका है- जनशक्ति का निर्माण। ऐसी जनशक्ति जो विभिन्न दायित्वों को संमर्थ हो, देश की संस्कृति का संवर्द्धन करे, राष्ट्रीय चरित्र से परिपूर्ण हो तथा प्रतियोगिता के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आत्म विश्वास के साथ खड़ी हो सके।

इन बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व के सन्तुलित विकास के लिए जहां विषय ज्ञान, कौशल, अभिवृत्तियाँ एवं मूल्यों का विकास अपेक्षित होगा, वहीं मूल्यों के प्रति निष्ठा जगाने में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 में कहा है कि 'समाज में अनिवार्य मूल्यों में निरंतर कमी तथा बढ़ते हुए सनकीपन के कारण पाठ्यक्रम में तथा शिक्षा व्यवस्था में समयानुसार परिवर्तन आवश्यक हो गया है, ताकि शिक्षा द्वारा सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों को विकसित किया जा सके।

बालक का व्यक्तित्व प्राकृतिक तथा वातावरणीय गुणों का उत्पाद होता है। प्राणी का जन्मजात स्वभाव होता है कि वह वातावरण में होने वाली पारस्परिक क्रियाओं का निरीक्षण करता है, तथा उन्हीं व्यवहारों को ग्रहण करने की कोशिश करता है। इसलिए यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि सीमित जन्मजात योग्यताओं के अलावा, वह कारक परिवेश वातावरण ही है जो बालक के विकास को प्रभावित करता है।

आज सभी प्रबुद्ध यह मानते हैं कि बालक का समुचित विकास तक तक नहीं किया जा सकता जब तक कि बच्चों के असीम जिज्ञासा से भरे ओजस्वी सस्तिष्क को तृप्त एवं विकसित करने के लिए स्वस्थ्य शैक्षिक, पारिवारिक तथा सामाजिक वातावरण का निर्माण नहीं किया जायेगा।

मनोविज्ञान के आधुनिक सिद्धांत बताते हैं कि बालक के विकास में वातावरण का प्रभाव सर्वप्रमुख होता है। सभी व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक बालक के विकास में वातावरण के निर्णायक प्रभाव को स्वीकारते हैं। प्रसिद्ध व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक वाटसन ने तो यहां तक कह डाला कि "तुम मुझे कोई भी बच्च दे दो जो कहोंगे उसे वहीं बना दूंगा।" वाटसन की उपर्युक्त उक्ति में वातावरण का बालक पर कितना अधिक प्रभाव पड़ता है, स्पष्टतः परिलक्षित होता है। यद्यपि आज शिक्षा की समान संरचना के लिए राष्ट्रीय प्रयास जारी है तथा 10+2+3 की शैक्षिक संरचना को लगभग पूरे देश में स्वीकार किया गया। इसके अतिरिक्त, समान पाठयचर्या तथा शैक्षिक अवसरों की समानताप्रदान करने का प्रयास भी जारी है। लेकिन इन सब प्रकार की समानताओं के बावजूद शैक्षिक भिन्नता मौजूद है विशेषकर ग्रामीण व शहरी विद्यालयों के वातावरण में। विद्यालयी वातावरण की यह भिन्नता विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, मूल्यों, दृष्टिकोणों, तथा शैक्षिक उपलब्धियों में भी अंतर पैदा करता है।

बालक को जो वातावरण उपलब्ध होता है, उसका प्रभाव उसके व्यक्तित्व, आत्मप्रत्यय, मूल्य एवं शैक्षिक उपलब्धि आदि पर पड़ता है।

इस शोध के माध्यम से यह जानकारी प्राप्त की जा सकती है, कि वह कैसा वातावरण है, जिसमें रहकर बालक का सम्पूर्ण विकास हो सकता है। इसके द्वारा यह ज्ञान भी प्राप्त हो सकता है कि ग्रामीण एवं शहरी वातावरण में वे कौन-कौन से पक्ष है, जो इन दोनों में अन्तर पैदा करते हैं। माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत् शिक्षकों के लिए भी यह अध्ययन अति उपादेय सिद्ध होगा, क्योंकि सभी वर्तमान विद्यालय, उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं समाज, अध्यापक से केवल यह आशा करते हैं कि बालक को न केवल सूचनात्मक ज्ञान दें, बल्कि उसका यह भी दायित्व होता है कि वह बालक की व्यक्तित्व विभिन्नताओं की पहचान कर उसकी अन्तनिहित मानसिक व सामाजिक योग्यताओं का विकास करे।

समस्या का कथन :

"माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों, आत्मप्रत्यय, मूल्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।"

शोध अध्ययन के उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए निम्न उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है -

1. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय का अध्ययन करना।
3. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन करना।
4. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
5. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों की तुलना करना।
6. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मूल्यों की तुलना करना।
7. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया है -

1. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन की परिसीमायें :

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल रीवा जिला के विद्यार्थियों को लिखा गया है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को लिया गया है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों को लिया गया है।
4. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल कला वर्ग के विद्यार्थियों को लिया गया है।
5. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल व्यक्तित्व गुणों, मूल्यों एवं शैक्षिक उपलब्धि को ही अध्ययन हेतु लिया गया है।
6. प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा सर्वश्रेष्ठ तकनीक एवं अपनी श्रेष्ठ योग्यता से कार्य किया गया है।

अनुसंधान की विधि :

अनुसंधानकर्ता ने प्रस्तुत शोध के लिये विधियों का अध्ययन किया है। यह कहना कठिन होगा कि उनमें से कौन सी विधि सर्वाधिक उपयुक्त है, प्रत्येक विधि में कुछ गुण तथा कमियां होती है। इसलिये यह कहना कठिन है, कि एक अनुसंधान विधि दूसरी अनुसंधान विधि से उत्कृष्ट या निकृष्ट है।

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधानकर्ता ने अध्ययन के उद्देश्य और साधनों की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुये अनुसंधान के वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (नॉमेर्टिव सर्वे मैथर्ड ऑफ रिसर्च) का प्रयोग किया है।

जनसंख्या :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में 10वीं कक्षा के रीवा जिले के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श की चयन की इकाई विद्यालय है। शोधकर्ता ने न्यादर्श की इकाईयों का चयन करने के लिये सर्वप्रथम रीवा जिला के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों (ग्रामीण एवं शहरी अराजकीय विद्यालय) में से अपने शोध अध्ययन हेतु (माध्यमिक विद्यालयों) न्यादर्श का चयन किया है। न्यादर्श चयन के लिये रीवा जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की सूची बनाकर उसमें से लाटरी विधि द्वारा आठ ग्रामीण क्षेत्र के एवं आठ शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों को चुना गया है। तदोपरांत इन विद्यालयों में से एक निश्चित अनुपात में कक्षा - 10 के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं को यादृच्छिकी प्रतिचयन विधि द्वारा चुना गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु अनुसंधानकर्ता ने यादृच्छिकी न्यादर्श की लाटरी विधि का चयन न्यादर्श हेतु किया है।

सारणी क्रमांक - 7.1
न्यादर्श वितरण

ग्रामीण विद्यार्थियों की संख्या			शहरी विद्यार्थियों की संख्या			कुल यो
छात्र	छात्रायें	यो	छात्र	छात्रायें	यो	कुल यो
150	150	30	150	150	30	600

शोध अध्ययन में प्रयुक्त चर :

स्वतंत्र चर : ग्रामीण एवं शहरी वातावरण।

आश्रित चर : व्यक्तित्व गुण, आत्मप्रत्यय, मूल्य, शैक्षिक उपलब्धि।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विभिन्न चरों के लिये निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है -

1. व्यक्तित्व परीक्षण व्यक्तित्व परीक्षण - कैटेल द्वारा निर्मित 16-पी.एफ.
2. व्यक्तित्व मूल्य प्रश्नावली - शैरी एवं वर्मा द्वारा निर्मित
3. शैक्षिक उपलब्धि - छात्रों के बोर्ड परीक्षा के प्रतिशत अंक

शोध अध्ययन में प्रयुक्त विभिन्न सांख्यिकीय विधियाँ :

प्रस्तुत शोध अध्ययनमें निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया है -

1. मध्यमान
2. मानक विचलन एवं
3. टी-परीक्षण

शोध अध्ययन से प्राप्त परिणाम :

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर प्राप्त परिणाम :

- व्यक्तित्व गुण ए, एफ, एम, ओ तथा क्यू$_3$ का ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी लगभग एक समान रूप से प्रतिनिधित्व करते हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य व्यक्तित्व गुण बी, सी, ई, जी, एच, आई, एल, एन, क्यू$_1$ तथा क्यू$_4$ पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर पाया गया है।
- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के जिन व्यक्तित्व गुणों के मध्य सार्थक अन्तर था, उन व्यक्तित्व गुणों पर ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्यमानों का अध्ययन करने पर स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी विद्यार्थी व्यक्तित्व गुण बी, सी, ई, जी, एच, आई, एल, एन तथा क्यू$_2$

का अधिक व्यापक रूप से प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि व्यक्तित्व गुण क्यू$_2$ का शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा ग्रामीण विद्यार्थी अधिक व्यपक रूप से प्रतिनिधित्व करते हैं।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों (केवल छात्रों) के व्यक्तित्व गुणों के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर प्राप्त परिणाम :

- व्यक्तित्व गुण ए, आई, एल तथा ओ का ग्रामीण एवं शहरी छात्र लगभग एक समान रूप से प्रतिनिधित्व करते हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के मध्य व्यक्तित्व गुण बी, सी, ई, एफ, जी, एच, एम, क्यू$_2$ तथा क्यू$_4$ पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर पाया गया जबकि व्यक्तित्व गुण क्यू$_1$ एवं क्यू$_3$ पर ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के मध्य सार्थकता के स्तर .05 पर सार्थक अन्तर पाया गया है।
- ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के मध्य जिन व्यक्तित्व गुणों के मध्य सार्थक अन्तर था, उन व्यक्तित्व गुणों पर ग्रामीण छात्रों के मध्यमानों का अध्ययन करने पर स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा शहरी छात्र व्यक्तित्व गुण बी, सी, जी, एच, एम, एन, एवं क्यू$_2$ का अधिक व्यापक रूप से प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि व्यक्तित्व गुण ई, एफ, क्यू$_1$, क्यू$_2$ एवं क्यू$_3$ का शहरी छात्रों की अपेक्षा ग्रामीण छात्र अधिक व्यपक रूप से प्रतिनिधित्व करते हैं।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों (केवल छात्राओं) के व्यक्तित्व गुणों के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर प्राप्त परिणाम :

- व्यक्तित्व गुण ए, आई, एवं क्यू$_3$ का ग्रामीण एवं शहरी छात्रायें एक समान रूप से प्रतिनिधित्व करते हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी छात्रायें के मध्य व्यक्तित्व गुण सी, ई, एफ, जी, एच, एल, एम, एन, ओ, क्यू$_1$ एवं क्यू$_2$ पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर पाया गया जबकि व्यक्तित्व गुण बी पर ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के मध्य सार्थकता के स्तर .05 पर सार्थक अन्तर पाया गया है।
- ग्रामीण एवं शहरी छात्रायें के मध्य जिन व्यक्तित्व गुणों पर सार्थक अन्तर था, उन व्यक्तित्व गुणों पर ग्रामीण छात्रायें के मध्यमानों का अध्ययन करने पर स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण छात्रायें की अपेक्षा शहरी छात्रायें व्यक्तित्व गुण सी, ई, एफ, एच, एल, एन, ओ, क्यू$_2$ एवं क्यू$_4$ का अधिक व्यापक रूप से प्रतिनिधित्व करती हैं, जबकि व्यक्तित्व गुण बी, जी, एम एवं क्यू$_1$ का शहरी छात्रायें की अपेक्षा ग्रामीण छात्रायें अधिक व्यपक रूप से प्रतिनिधित्व करती हैं।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के विभिन्न मूल्यों के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर प्राप्त परिणाम :

- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में धार्मिक मूल्य का विकास एक समान रूप से हुआ है।
- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्य एक समान रूप से विकसित नहीं है। शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा ग्रामीण विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।
- ग्रामीण एवं विद्यार्थियों में प्रजातांत्रिक मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों में प्रजातांत्रिक मूल्य अधिक विकसित हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में सौन्दर्यात्मक मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों में सौन्दर्यात्मक मूल्य अधिक विकसित हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में अर्थ मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों में अर्थ मूल्य अधिक विकसित हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में ज्ञान मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों में ज्ञान मूल्य अधिक विकसित हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में सुख मूल्य समान रूप से विकसित हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में पावर मूल्य समान रूप से विकसित नहीं है। ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों में पावर मूल्य अधिक विकसित हुए है।
- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों में पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में स्वास्थ्य मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों में स्वास्थ्य मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों (केवल छात्रों) के विभिन्न मूल्यों के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर प्राप्त परिणाम :

- ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में धार्मिक मूल्य का विकास एक समान रूप से हुआ है। शहरी छात्रों की तुलना में ग्रामीण छात्रों में धार्मिम मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में सामाजिक मूल्यों का विकास एक समान नहीं हैं। शहरी छात्रों की तुलना में ग्रामीण छात्रों में सामाजिक मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में प्रजातांत्रिक मूल्य एक समान नहीं है। ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा शहरी छात्रों प्रजातांत्रिक मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।

- ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में सौन्दर्यात्मक मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा शहरी छात्रों में सौन्दर्यात्मक मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में अर्थ मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा शहरी छात्रों में अर्थ मूल्य अधिक विकसित हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में ज्ञान मूल्य समान रूप से विकसित हुए
- ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में सुख मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा शहरी छात्रों में सुख मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में पावर मूल्य समान रूप से विकसित नहीं है। ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा शहरी छात्रों में पावर मूल्य अधिक विकसित हुए है।
- ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा शहरी छात्रों में पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में स्वास्थ्य मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा शहरी छात्रों में स्वास्थ्य मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों (केवल छात्राओं) के विभिन्न मूल्यों के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर प्राप्त परिणाम :

- ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं में धार्मिक मूल्य का विकास एक समान रूप से हुआ है।
- ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं में सामाजिक मूल्यों का विकास एक समान नहीं हैं। शहरी छात्राओं की तुलना में ग्रामीण छात्राओं में सामाजिक मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं में प्रजातांत्रिक मूल्य एक समान नहीं है। ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा शहरी छात्राओं में प्रजातांत्रिक मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं में सौन्दर्यात्मक मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा शहरी छात्राओं में सौन्दर्यात्मक मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं में अर्थ मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा शहरी छात्राओं में अर्थ मूल्य अधिक विकसित हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं में ज्ञान मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हुए हैं। ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा शहरी छात्राओं में ज्ञान मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं में सुख मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। शहरी छात्राओं की अपेक्षा ग्रामीण छात्राओं में सुख मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं में पावर मूल्य समान रूप से विकसित नहीं है। ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा शहरी छात्राओं में पावर मूल्य अधिक विकसित हुए है।
- ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं में पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा शहरी छात्राओं में पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं में स्वास्थ्य मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा शहरी छात्राओं में स्वास्थ्य मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों (छात्र एवं छात्राओं) की शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर प्राप्त परिणाम :

- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एक समान नहीं है। ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक है।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों (केवल छात्र) की शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर प्राप्त परिणाम :

- ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एक समान नहीं है। ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा शहरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक है।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों (केवल छात्राओं) की शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर प्राप्त परिणाम :

- ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एक समान नहीं है। ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अधिक है।

शोध निष्कर्षों के शैक्षिक अनुप्रयोग :

असमानता इस संसार का सत्य है, वर्तमान में भारत ही क्या समस्त विश्व के शिक्षाविद, समाज सुधारक जोर-जोर से आवाज उठाकर असमानता का विरोध और समानता की बात कर रहे हैं, क्योंकि सबको समान सुविधायें उपलब्ध न होने के कारण शिक्षा की गुणवत्ता तथा बालकों का व्यक्तित्व प्रभावित हो रहा है।

अतः प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों को प्रस्तुत करने से शोधार्थी का तात्पर्य यह है कि यदि हमें "सबके लिए शिक्षा" व "ऊँच-नीच" के भेदभाव को मिटाने का संकल्प पूर्ण करना चाहते हैं, तो सरकार को सभी क्षेत्रों में समान सुवधियें उपलब्ध करानी होगी। जिससे की इन सुविधाओं का लाभ उठाकर प्रत्येक क्षेत्र से संबंधित विद्यार्थी अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित कर सके एवं समान रूप से उन्नत कर अपने परिवार, समाज व राष्ट्र को गौरवान्वित कर सकें।

इस प्रकार वर्तमान शोध के परिणाम कई प्रकार समाचीन प्रतीत होते हैं, प्रस्तुत शोध निष्कर्षों का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जा सकता है। यह निम्न प्रकार से स्पष्ट हैं -

- अभिभावकों के लिए उपयोग।
- निर्देशक की दृष्टि से उपयोग।
- प्रशासकों व समाज सुधारकों के लिए उपयोग।
- शोध की दृष्टि से उपयोग।
- भविष्यवाणी के लिए उपयोग।

अभिभावकों के लिए उपयोग :

बच्चे का सम्पूर्ण विकास उसी स्थिति में सम्भव है, जबकि उसको उचित वातावरण, उचित शिक्षा व पौष्टिक भोजन की उपलब्धता सुगमता से होंगे। प्रत्येक माता-पिता का मुख्य उद्देश्य होता है, अपने बच्चों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना। अतः ग्रामीण अभिभावक भी शोध से प्राप्त परिणामों के लाभ उठाकर अपने बच्चों की हीन भावना, कार्य उपेक्षा व निम्न शैक्षिक उपलब्धि आदि समस्याओं को सहयोग देने वाले कारकों को अपने पारिवारिक वातावरण से निष्कासित कर, शहरी बच्चों की तरह ही अपने बच्चों का विकास कर सकते हैं।

निर्देशन की दृष्टि से उपयोग :

प्रत्येक बच्चे की कुछ न कुछ समस्यायें अवश्य होती है। कुछ समस्याओं की प्रकृति तो इस प्रकार की होती है जिनकों नियंत्रित किया जा सकता है, परंतु कुछ ऐसी होती है जिनके कारण बालक के विकास पर विपरीत प्रभाव परिलक्षित होने लगता है। ऐसे समय में उसे एक निर्देशक या परामर्शदाता की आवश्यकता महसूस होती है। अगर यह सहायता उचित प्रकार से न प्राप्त हो तो उसके भयंकर परिणाम सामने आते हैं। अतः इस अध्ययन के निष्कर्षों का लाभ उठाते हुए परामर्शदाता विद्यार्थियों के द्वारा प्रकट की जाने वाली सामंजस्य तथा सीखने संबंधी समस्याओं का समाधान सफलतापूर्वक कर सकते हैं।

प्रशासकों व समाज सुधारकों के लिए उपयोग :

यह अध्ययन ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की विभिन्न दृष्टिकोणों से तुलनात्मक स्थिति को स्पष्ट करता है। इस शोध के परिणामों से प्रशासक व समाज सुधारक यह समझ जायेंगे कि दोनों अंचलों में कौन-कौन सी सुविधायें उपलब्ध करायी जायें जिससे उन अंचलों में निवास करने वाले बच्चों का उचित शैक्षित तथा सामाजिक विकास संभव हो सके। अतः समाज कल्याण की योजनायें बनाते समय इस शोध निष्कर्षों से लाभ उठाकर ग्रामीण क्षेत्रों के लिए विशेष सुविधायें जैसे- वाचनालय, पुस्तकालय व अन्य शैक्षिक सुविधायें करा सकते हैं।

शोध की दृष्टि से उपयोग :

समाज के सांस्कृतिक विकास का गुप्त रहस्य अनुसंधान में निहित है। अनुसंधान नये तथ्यों की खोज के द्वारा अज्ञानरूपी अंधकार को दूर कर देता है व उससे प्राप्त तथ्य हमें कार्य करने की श्रेष्ठतम् विधाओं तथा उत्तमतर परिणाम प्रदान करते हैं। ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के लिए जितने अनुसंधान होने चाहिए थे, उतनी संख्या में नहीं हुए। अतः यह शोध निश्चित रूपेण शिक्षा जगत में विद्वजनों का गहन अध्ययन हेतु ध्यान आकर्षित करेगा।

भविष्यवाणी के लिए उपयोग :

शोधकर्ता को अपने प्रयोजन की वर्तमान स्थिति का ही अध्ययन करके संतुष्ट नहीं हो जाना पड़ता है, उन्हें प्रयोजनों के संबंध में उपयुक्त भविष्यवाणी भी करनी पड़ती है। जिसके आधार पर प्रयोज्य अपने जीवन की भावी योजनायें बनाते हैं। प्रयोजन के संबंध में भविष्यवाणी करने के लिए भी यह अध्ययन सहायक सिद्ध होगा।

भविष्य के शोध अध्ययन हेतु सुझाव :

भविष्य में शोध अध्ययन करने के लिएयह आवश्यक होता है कि वर्तमान शोध-अध्ययन की जो परिसीमायें हैं, उनकों दूर करने का प्रयत्व किया जायें, इस संबंध में निम्नलिखित तत्यों के संदर्भ में विशेष ध्यान दिया जाये -

- अध्ययन को अधिक विश्वसनीय तथा वैध बनाने के लिए एक से अधिक शोधकर्ताओं को अध्ययन करने हेतु सम्मिलित किया जा सकता है।
- समय तथा धन की उपलब्धता को बढ़ा करके अध्ययन में अधिक व्यापकता, गहनता तथा लगनशीलता लाने का प्रयास किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन की चार ही चरों तक सीमित न रखकर कई चरों के परिपेक्ष में किया जा सकता है।
- यह अध्ययन अन्य प्रदेशों के साथ मध्यप्रदेश के छात्रों को ले करके तुलनात्मक रूप से भी किया जा सकता है।
- वर्तमान शोध अध्ययन के द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों, मूल्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया है। इसी तरह का अध्ययन स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को लेकर किया जा सकता है।

- इस तरह के अध्ययन के अन्तर्गत रीवा जिला के अलावा अन्य जिलों के विद्यार्थियों को लेकर किया जा सकता है।
- इस अध्ययन में केवल कक्षा 10 के कला वर्ग के विद्यार्थियों को लिया गया है जबकि इसी तरह का अध्ययन विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों को लेकर भी किया जा सकता है।
- इसी प्रकार शोध कार्य में मात्र 10 मूल्यों को ही सम्मिलित किया गया है जबकि अन्य मूल्यों को लेकर भी एक शोध कार्य किया जा सकता है।

सन्दर्भ :

1. अग्रवाल, वी.: वैल्यू सिस्टम एण्ड डायमेन्शन्स ऑफ यूनिवर्सिटी स्टूडेन्ट्स ऑफ यू.पी.। डाक्टोरल थीसिस, लखनऊ यूनिवर्सिटी, 1959 उद्धृत, एम.बी. बुच द्वारा संपादित ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, सेन्टर ऑफ एडवांस्ड स्टडी इन एजूकेशन, बड़ोदा, 1974, 99।
2. आलपोर्ट, जी. डब्ल्यू.: ए साइकोलोजीकल इन्टरप्रिंटेशन, हेनरी, होल्ट, न्यूयार्क।
3. कॉल, लोकेश, "मैथडोलौजी ऑफ ऐजुकेशन रिसर्च", विकास हाऊस, प्राइवेट लिमिटेड, 1984
4. कार्टर्स, एन,एन,जे,आर: सोशल क्लास एनालिसिस एण्ड कन्ट्रोल ऑफ पब्लिक एजूकेशन। हार्वर्ड एजूकेशन रिव्यू, 1953, 23, 265-82.
5. कुमार, प्रमोद: पर्सनालिटी स्टडी ऑफ स्टुडेन्ट लीडरशिप। प्रकाशित पी.एच.डी. थीसिस, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी, 1964.
6. जोशी, एम.सी.: सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण (ए टेस्ट ऑफ जनरल मेन्टल एबिलिटी) वाराणसी, रूपा साइकोलोजिकल सेन्टर, 1968.
7. चैमेरो, टोमस और फर्नहैम एड्रीन (2003): पर्सनेल्टी ट्रेट्स एण्ड एकेडमिक एक्जामिनेशन परफोरमेन्स, यूरोपियन जर्नल ऑफ पर्सनेल्टी 2003 (मई-जून) वोल्यूम-17 (3), 237-250.
8. जैन जयन्ती आर.; 1990: ए स्टडी ऑफ द सेल्फ कान्सेप्ट ऑफ एडोलिसेन्ट गर्ल्स एण्ड आइडेन्टिफिकेशन विथ पैरेन्ट एण्ड पैरेन्ट सब्स्टीटयूट्स एज, कान्ट्रीब्यूटिंग टू रियलाइजेशन ऑफ एकेडमिक गोल्स। पी.एच.डी., एजूकेशन, नागपुर, यूनिवर्सिटी, फिथ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, पृ. - 887.
9. डॉ. माथुर, एस.एस.: "शिक्षा मनोविज्ञान", प्रकाशक: विनोद पुस्तक मन्दिर, कार्यालय: रांगेय राघव मार्ग, आगरा-2, मुद्रण: कैलाश प्रिंटिंग प्रेस।
10. डॉ. वर्मा प्रसाद, कामता, "शिक्षा मनोविज्ञान", प्रकाशक दोआब हाऊस, दिल्ली, मुद्रक मित्तल प्रिन्टर्स, शाहदरा।